बाब तीन निसानका रूहअल्ला इमाम असराफील

चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन।
ईसा इमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन।। १ ।।

चार निशानों का वर्णन किया है। बाकी तीन ईसा, इमाम और असराफील जिन्होंने दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) का झण्डा खड़ा किया है, उन्हें और समझ लो।

निसान लिखे दिन कयामत, सो तो रखे हक हादी हाथ।
या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें सुंनत–जमात। । २ ।।

कयामत के निशानों को श्री राजजी महाराज ने अपने हाथ में रखा है। इनके भेद उनकी जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से श्री प्राणनाथजी या मोमिन खोलेंगे।

तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठ्या झंडा नूर।
खड़ा किया बीच हिंदके, हुआ आसमान जिमी जहूर।। ३ ।।

इसलिए मक्का से साफ लिखवा दिया कि वहां से ईमान का नूरी झण्डा हिन्दुस्तान में पन्नाजी में खड़ा किया। जहां से सब जगह जमीन-आसमान में प्रकाश फैला।

निसान लिखे सो सब मिले, जो कयामत के फुरमाए।
ताए नफा न देवे तोबा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए।। ४ ।।

कयामत के समय के जो सात बड़े निशान कहे थे, वह सब यहां जाहिर कर दिए। जो श्री प्राणनाथजी के झण्डे के नीचे नहीं आएंगे, उन्हें पिछली बन्दगी का लाभ नहीं मिलेगा।

लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा नफा नाहें।
जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी माहें।। ५ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि जागृत बुद्धि के ज्ञान के बाद नूरी झण्डे के नीचे जो आया वही मर्द मोमिनों की जमात का है। बाकी को पछताना पड़ेगा।

कुल्ल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन।
इन इलमें जहान जुलमती, करी हिदायत रोसन।। ६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से सबको अखण्ड परमधाम की पहचान हो जाती है। इस कुलजम सरूप की वाणी से निराकार की दुनियां को भी पार के ज्ञान की पहचान करा दी।

जब हक झंडा नूर महंमदी, बीच खड़ा हुआ हिंद के।
तब अक्स नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे।। ७ ।।

जब रसूल मुहम्मद के ज्ञान का नूरी झण्डा मक्का से उठकर श्री पन्नाजी में आकर खड़ा हो गया, तब मक्का में अन्धेर और कुफ्र मच गया। वहां से ईमान उठकर पन्नाजी में आ गया।

तो भी न विचारें दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सौं खाए।
हक हादी उठाया वह झंडा, जिनें रात के अमल चलाए।। ८ ।।

मक्का से सख्त सौगन्ध खाकर लिखने पर भी यह झूठे दिल वालों ने उस पर विचार नहीं किया। अब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने रात में चलाए गए सभी धर्मों को समाप्त कर उनके झण्डों को समाप्त कर दिया।

Nijanand App

हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खड़ा किया जाए।
सो इन बखत सदी आखिरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए।। ९ ।।

श्री प्राणनाथजी के बिना दीन का हकीकी झण्डा और कोई खड़ा नहीं कर सकता, इसलिए श्री प्राणनाथजी महाराज ने अज्ञान में चल रहे सभी सम्प्रदायों के झण्डे समाप्त कर दिए।

वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए।
जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दई पोहोंचाए।। १० ।।

यह जाहिरी झण्डे भी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन समाप्त कर सकता था। जो जिस नीयत से प्राणनाथजी के पास आया, उसको वही मंजिल प्राप्त हुई।

लिखियां ए बुजरकियां, ए जो कहियां बीच आखिरत।
सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी कयामत।। ११ ।।

आखिरत के समय की बुजरकियां मोमिनों को मिलने की लिखी हैं। उन्हें यह झूठी दुनियां के धर्माचार्य कहते हैं कि हमारी बुजरकियां हैं और हम ही दुनियां को कायम करेंगे।

कहें हम खासी उमत, और हमहीं वारस कुरान।
कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान।। १२ ।।

वह तो यह भी कहते हैं कि हम ही खुदा की खास उम्मत हैं और हम ही कुरान के वारिस हैं। हमीं से दुनियां को सच्चा न्याय मिलेगा और हमारे ही अन्दर खुदा का पक्का ईमान है।

ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर।
पहाड़ पूजें हम निसान, बैत बका देखावें फजर।। १३ ।।

यह साफ लिखा है कि दुनियां वालों के दिलों पर अज्ञानता का सूर्य उदय हुआ जो मक्का के जाहिरी लोग पहाड़ पूजते हैं और कहते हैं कि फजर के समय इन्हीं पहाड़ों से हमको अखण्ड घर मिलेगा।

हम देखें राह निसान की, जो कहे बड़े कयामत।
देखें पैदा बैत अल्लाह से, जो हमसों करी सरत।। १४ ।।

जाहिरी लोग कहते हैं कि हम कयामत के उन बड़े निशानों का रास्ता देख रहे हैं जैसा मुहम्मद साहब ने हमसे वायदा किया है कि सभी निशान मक्का मदीना से जाहिर होंगे।

लिखे निसान कौल कयामत के, ले माएने बातन।
सो माएने मगज पाए बिना, समझ न परी किन।। १५ ।।

कयामत के मायने तब समझ में आते हैं जब उनके बातूनी अर्थ लिए जाएं, इसलिए बातूनी, अर्थों को समझे बिना किसी को आज दिन तक उनकी खबर नहीं हुई।

सात निसान बड़े कहे, जासों पाइए कयामत।
सोए दुनी तब देखसी, ऊगे सुरज मारफत।। १६ ।।

कयामत के सात निशानों का वर्णन किया है। यह दुनियां को तब दिखाई देंगे जब मारफत के ज्ञान का सूर्य जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दुनियां में जाहिर हो जाएगी।

Nijanand App

तो लों अंधेरी रात की, छूटे नहीं क्यों ए कर।
देखें निसान बातून माएनों, तब पावें दिन आखिर।। १७ ।।

तब तक अज्ञान के रास्ते किसी तरह से भी दुनियां छोड़ नहीं पाएगी। जब जागृत बुद्धि से बातूनी अर्थ समझ आएंगे तभी उन्हें कयामत के दिन की पहचान होगी।

जो लों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का।
तब लग फना बीचमें, हुए जिद कर तफरका।। १८ ।।

जब तक दुनियां वाले ऊपर के मायने लेते रहे, तब तक अंधेरे में लड़-झगड़कर अलग-अलग धर्म चलाते रहे।

कौल तोड़ जुदे हुए, तो नारी कहे बहत्तर।
लिख्या जलसी आगमें, और कहा कहे इन ऊपर।। १९ ।।

इसलिए रसूल साहब की वाणी से हटकर उनके धर्म के बहत्तर टुकड़े हो गए। यह दोजख की आग में जलेंगे। इसके ऊपर अब क्या कहा जाए?

हक अर्स बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत।
दिन हुए सब देखिए, सूरज ऊगे मारफत।। २० ।।

श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान तब हो, जब कुरान के रहस्य तारतम वाणी के ज्ञान के सूर्य से खुल जाएं और सबको सच्ची पहचान हो जाए।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी से।
अजूं देखें नहीं दज्जाल को, जो जाहेर हुआ सबमें।। २१ ।।

मक्का वालों के दिल में अज्ञान का सूर्य उदय हुआ। वहां की जमीन में मनुष्य पशु के रूप में बदल गए। दज्जाल सब में जाहिर हो गया, पर वह न देख सके।

नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खड़ा हकीकी दीन।
क्यों दाखले मिले दिल मजाजी, दिल दुस्मन तोड़े आकीन।। २२ ।।

जब इमाम मेंहेंदी साहब ने नूरी झण्डा खड़ा कर दिया तो दुश्मन अजाजील ने दुनियां के दिलों को श्री प्राणनाथजी की वाणी पर यकीन नहीं लाने दिया, इसलिए झूठे दिल वाले और सच्चे दिल वाले आपस में कैसे मिल सकते हैं?

सूर बाजत असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर।
ओतो ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर।। २३ ।।

अब जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील ज्ञान का बिगुल बजा रहा है। यह दुनियां वाले जिनके दिल और कान ही नहीं हैं, वह कैसे इस वाणी को सुन सकते हैं? यह असराफील फरिश्ता तो बातूनी अर्थ बता रहा है, जिन पर कयामत का मुद्दा है।

तो कह्या रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड़ उड़ाए।
सो पहाड़ जरे ज्यों खाली मिने, फिरे उड़ते ना ठेहेराए।। २४ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा है कि असराफील फरिश्ते के ज्ञान की आवाज से बड़े-बड़े धर्माचार्यों के अहंकार समाप्त हो जाएंगे। वह फिर जरा मात्र भी नहीं टिकेंगे। वह मिट्टी की तरह हवा में उड़ते फिरेंगे।

Nijanand App

तो मुसाफ मगज असराफीलें, किए जाहेर कई विध गाए।
तो एक सूरें दुनी फना करी, किए दूजे सूरें कायम उठाए।। २५ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान के छिपे रहस्यों को कई तरह से जाहिर कर दिया। उसमें पहला सूर फूंककर दुनियां के झूठे अहंकार के ज्ञान को समाप्त किया और दूसरी बार सूर फूंककर सबको बहिश्तों में अखण्ड कर देगा।

ए पहाड़ जरे ज्यों क्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार।
पहाड़ कहे कुफर खुदी के, सो हुए पाक जरे ज्यों निरवार।। २६ ।।

बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग यह विचार नहीं करते कि बड़े-बड़े पहाड़ रूई के कण के समान कैसे हो गए? बातूनी अर्थों में पहाड़ अहंकार कहे गए हैं, इसलिए जागृत बुद्धि से अहंकार मिट गए और वह पाक-साफ हो गए।

पाक जो होवें इन बिध, जब उड़े गुमान कुफर।
पाक हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर।। २७ ।।

इस तरह से जो पाक-साफ हो गए और जिनके अहंकार समाप्त हो गए, उन्हें अक्षर की नजर में बहिश्तों में अखण्ड सुख प्राप्त हुए (कायमी मिली)।

लिया दुनी पे ईमान, और दुनियां की बरकत।
खैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत।। २८ ।।

असराफील फरिश्ते ने दुनियां से ईमान छीन लिया। बरकत छीन ली। कुरान का ज्ञान छीन लिया। सन्त लोगों से आशीर्वाद की शक्ति छीन ली।

छीन लिया एता मता, तो भी न हुई खबर।
क्यों देखे मजाजी दुनियां, जो लों बातून नहीं नजर।। २९ ।।

जब इतनी सारी न्यामतें छिन गईं, फिर भी झूठी दुनियां वालों को कुरान के बातूनी रहस्यों की खबर नहीं हुई। यह झूठी दुनियां जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना कैसे समझेगी?

बड़ी दरगाह से नामें वसीयत. पुकार करी केती आए।
तो भी न विचारे दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सौं खाए।। ३० ।।

मक्का से वसीयतनामे आए, तो संसार में हकीकत का हल्ला मचाया कि यह बात सच्ची है। हम सौगन्ध खाकर लिख रहे हैं। फिर भी झूठे दिल वाले इसका विचार नहीं करते।

हिसाब कह्या होसी हिंदमें, पुरसिस करसी हक।
हक इलम ले रुहअल्ला, करसी सबों बेसक।। ३१ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत में हिन्द में ही सबका हिसाब होगा। श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी से सब के संशय मिटा देंगे।

कई बुजरक कहावते रातमें, बैठे बैतअल्ला ले।
हक हममें बैठकरें हिसाब, जानें हमहीं सिर सबके।। ३२ ।।

मक्का के ज्ञानी लोग अज्ञान के अंधेरे में अपने को महान समझते थे और कहते थे कि खुदा हमारे बीच आकर इन्साफ करेंगे, इसलिए हम ही सबसे बड़े हैं।

Nijanand App

कहे पहाड़ कुफर खुदी के, बिन हक इलमें जाहेर बढ़े।
तब हकें मता छीन ले, पहाड़ किए हलके।। ३३ ।।

यह मक्का में इमाम लोग अहंकार रूपी पहाड़ बने बैठे थे। इन्हें तारतम वाणी के ज्ञान का अभी कुछ पता नहीं है। असराफील फरिश्ते ने इन सबका ज्ञान छीन लिया और उन सबके अहंकार को हलका कर दिया।

जब यों बुजरक हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए।
कुफर खुदी जब उड़ गई, तब गुसल किया सब अंग धोए।। ३४ ।।

जब इस तरह से बड़े-बड़े कहलाने वाले लोग हलके हो गए, तो उनका अहंकार उड़ गया। तब उन्होंने अपने संसार की चाहनाएं समाप्त कर दीं।

जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार।। ३५ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी महाराज को जिस रूप में पहचाना, उनको श्री प्राणनाथजी उसी रूप में मिले। इस तरह से अपने-अपने यकीन के अनुसार बदला मिला। अब चाहे जीतो या हारो, तुम्हारे हाथ है।

हिसाब किया देखे नहीं, हादिएं करी फजर।
किए फैल पुकारे बुजरक, बिन ईमान न देखे नजर।। ३६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने सबका हिसाब करके ज्ञान का उजाला कर दिया है। बड़े कहलाने वाले अब भी कर्मकाण्ड को बड़ा कहते हैं, क्योंकि उनके पास ईमान नहीं है, इसलिए जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की पहचान नहीं कर पाते।

क्यों ए न आवे पढ़ों ईमान, करें न दिल सहूर।
तो छीन ले भेजी वारसी, आप मोमिनों हाथ हक नूर।। ३७ ।।

यह पढ़े-लिखे लोग ईमान न होने के कारण से दिल से विचार नहीं करते, इसलिए श्री प्राणनाथजी ने इनका ज्ञान छीनकर अपने मोमिनों के हाथ दे दिया।

लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ मूसा एक हम।
महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावे हुकम।। ३८ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे में लिखा है कि यहूदी लोग कहते थे कि मूसा पैगम्बर और हम ही सबसे बड़े ज्ञानी हैं। देखते हैं कि रसूल साहब किस तरह से अपना नया संगठन बनाकर हुकूमत चलाते हैं।

मिलावा महंमद का, ए जो मिले दरवेस।
देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस।। ३९ ।।

यह फकीर लोग भी मिलकर कहते थे कि देखें, हमारे सहयोग के बिना रसूल साहब कैसे अपनी जमात को इकट्ठा कर सकेंगे।

जो मुनाफक ताना मारते, कौल करते थे रद।
मारे याही सिर्क से, अब नूर झंडे महंमद।। ४० ।।

जो मुनकिर लोग रसूल साहब को ताना मारते थे और रसूल साहब के वचनों को झूठा कहते थे, उन्हीं वचनों को सत्य सिद्ध करके श्री प्राणनाथजी ने अपना नूरी झण्डा पत्राजी में खड़ा किया।

Nijanand App

रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए।
वह तो भी टेढ़ाई न छोड़े, रसूल मेहेर न छोड़ें ताए।। ४१ ।।

रसूल साहब ऐसे लोगों के ताने भरे वचनों को बड़े प्यार से सुनते थे। फिर मेहर करके उनको बुलाते भी थे। यह विनाशकारी लोग अपनी टेढ़ाई नहीं छोड़ते थे। हमेशा संशय पैदा करते थे। तो रसूल साहब उनको अपने पास बुलाते थे और उन पर भी अपनी मेहर करते थे।

तब आयत भेजी हक ने, ल्याया जबराईल।
सो देखो आयत में, हक केहेसी असराफील।। ४२ ।।

तब खुदा ने जबराईल फरिश्ते के हाथ एक आयत भेजी। जिसमें लिखा है कि आखिरत में असराफील फरिश्ता आएगा और हकीकी पहचान इमाम मेंहदी के रूप में कराएगा।

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ।
सो हादिएं देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इन्साफ।। ४३ ।।

मक्का के लोगों ने कसम खाकर वसीयतनामे में लिखकर भेजा कि यहां से कुरान उठ गया, ईमान उठ गया और इमाम मेंहदी साहब ने अपना नूरी झण्डा हिन्द में कायम किया है। वही सबका न्याय चुकाएंगे।

सो भी लिख्या दिन कयामत, यों वारसी दई पोहोंचाए।
सो देखो सिपारे बाईसमें, जो उमी रोसन किए आए।। ४४ ।।

कुरान में जो कयामत के दिनों के संकेत थे वह मोमिनों को मिल गए। इन अनपढ़ मोमिनों ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से सारे संसार को ज्ञान दिया। यह कुरान के बाइसवें सिपारे में लिखा है।

खोज्या ना ढूंढ्या ना पढ़े, दिए मोमिनों हिस्से कर।
जो एता झंडे किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर।। ४५ ।।

मोमिनों को यह ज्ञान की बातें कहीं ढूंढ़नी या खोजनी नहीं पड़ीं। वह तो नूरी झण्डे (यकीन के) ने सब जाहिर कर दिया। फिर भी दुनियां आत्मदृष्टि से नहीं देखती।

ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगूं भी फुरमाया होए।
सो जरा न छूटे फुरमाए से, तुम देखोगे सब कोए।। ४६ ।।

कुरान में जो लिखा था, वही हुआ और आगे भी जो लिखा है, वही होगा। उसमें से जरा भी छूटेगा नहीं। यह तुम अपनी आंखों से सब देखोगे।

कुरान ल्यावे आखिर, आवसी फुरमान बरदार।
अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार।। ४७ ।।

कुरान में लिखे अनुसार उसके रहस्य आखिर में खुलेंगे। कुरान को मानने वाले संसार में आएंगे, कुरान के कहे अनुसार आचरण करेंगे और इनके अन्दर किसी प्रकार का संशय नहीं होगा।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब।
ए बड़े काम कौन करसी, बिना आखिरी खिताब।। ४८ ।।

झूठे दिल वाले इस बात को नहीं समझते कि कुरान के रहस्य इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ही खोल रहे हैं। यह इतना बड़ा काम श्री प्राणनाथजी के बिना भला और कौन कर सकता है? क्योंकि इन्हीं के सिर पर खोलने का अधिकार है।

Nijanand App

ए अव्वल से आखिर लग, दुनी मुई मरेगी जे।
कर कजा इन मुसाफ सों, कौन उठावसी मुरदे।।४९।।

इस संसार में शुरू से अन्त तक दुनियां के लोग मरते रहे हैं और मरेंगे। तारतम वाणी के बिना इन सब का न्याय कौन करेगा? कौन मिटने वाले तनों में सोई आत्माओं को जगाएगा?

जो लों न चीन्हे महंमद को, तो लों सुध ना जमाने।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने।।५०।।

जब तक दुनियां वाले श्री प्राणनाथजी की पहचान नहीं कर लेते, तब तक उनको जमाने की तथा कयामत की सुध नहीं है। अब तक उन्हें अखण्ड घर परमधाम की तथा इस झूठे मिटने वाले संसार की हकीकत का पता नहीं है। उनको यह भी खबर नहीं है कि हमारा लाभ किसमें है और नुकसान किसमें है?

सो पाइए बातून माएने, उपले आखिर नुकसान।
हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान।।५१।।

यह रहस्य बातूनी मायनों से ही जाने जाते हैं। ऊपर के अर्थों से सदा नुकसान होता है। जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से सब पहचान होती है। बिना तारतम वाणी के सभी रात के अंधेरे में पशुवत् भटकते रहे हैं।

ए माएने मुसाफ सोई करे, हकें भेज्या जिन ऊपर।
कुंजी इलम आई जिनपे, सोई खोल दे खुसखबर।।५२।।

खुदा ने जिनके लिए यह कुरान का सन्देश भेजा है, इसके अर्थ वही कर सकेंगे। तारतम वाणी का ज्ञान इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के पास आया है। वही स्वयं कुरान के रहस्य खोलकर अपने आने की खुशखबरी दे रहे हैं।

रसूल आखिरी अल्लाह का, ल्याया आखिरी किताब।
खोले रूहअल्ला आखिरी, दे मेंहेंदी को लिया सवाब।।५३।।

आखिरी पैगम्बर रसूल साहब आखिरी किताब कुरान को लाकर और रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाकर दोनों ने कुरान और तारतम कुंजी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथ जी को देने का सवाब लिया।

आई कुंजी इलम ईमामपे, जिन सिर आखिरी खिताब।
कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत आब।।५४।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के पास तारतम वाणी तथा जागृत बुद्धि और कुरान आ गया। इन्हीं को कुरान के खोलने का अधिकार है। यही इमाम मेंहेंदी साहब अपनी वाणी से सबका न्याय करेंगे, जिससे सब दुनियां को अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल।
सरा तोरा बनी असराईलका, हकें दई बनी इस्माईल।।५५।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है, जिसको जागृत बुद्धि के ज्ञान से विचार करके देखो। खुदा ने जाहिरी गद्दी मेहराज ठाकुर से लेकर बिहारीजी को दे दी।

Nijanand App

फुरकान दई हारून को, सो देखो कौल आखिर।
कोई कहे ए किस्से हो गए, सो कहे बेकौली बेखबर।।५६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने छत्रसालजी को कयामतनामा के वचनों की बख्शीश की। दुनियां वाले कहते हैं कि यह कुरान की बीती बातें हैं, इसलिए वह इन वचनों से मुनकिरी करते हैं, क्योंकि उनको इसकी पहचान नहीं है।

किस्से कुरान तौरेत के, पढ़े डालत पीठ पीछल।
कहे हो गए किस्से रातमें, यों इनों खोया फजर बका फल।।५७ ।।

कुरान और तौरेत के किस्सों को पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि यह तो बीती बातें हैं। ऐसा कहने से जो आखिर में इनसे लाभ होने वाला था, वह फल भी उन्होंने खो दिया।

जेता मुसाफ माएना, सब नजूम और बातन।
सो खोले काम कयामतके, दिन होसी सबों रोसन।।५८ ।।

कुरान के जाहिरी और बातूनी जितनी भी भविष्यवाणी है, उससे कयामत की जानकारी मिलती है। अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने उन सब कयामत के रहस्यों को खोल दिया है। अब सबको सच्चा ज्ञान मिल जाएगा।

लिख्या सिपारे आठमें, तो लों पढ़या नहीं कुरान।
मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान।।५९ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में लिखा है कि जब तक कुरान के रहस्य समझ न आ जाएं, तब तक यह न समझ लेना कि हमने कुरान को पढ़ा है। तब तक यह कैसे समझ आए कि हमें उससे लाभ हुआ या हानि?

ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फुरमान किन ऊपर।
साल हजार नब्बे लग, ए पाई ना किन खबर।।६० ।।

यह कुरान का ज्ञान किसने भेजा, किसके वास्ते आया और कौन लेकर आया? रसूल साहब के एक हजार नब्बे वर्ष (सम्वत् १७३५ तक) यह जानकारी किसी को नहीं मिली।

जाहेर कह्या ईसा आखिर, आए करसी एक दीन।
एही दज्जाल को मारसी, एही देसी सबों आकीन।।६१ ।।

कुरान में जाहिर लिखा है कि आखिर को ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी आकर सबको खुदा का पूजक बनाएंगी और सबके झूठे अहंकार को समाप्त कर सबके अन्दर यकीन पैदा करेंगी।

मुरदे एही उठावसी, करसी साबित नबुवत।
और साबित कुरान माजजा, ए करसी ईसा हजरत।।६२ ।।

ईसा रूह अल्लाह ही अपने दूसरे तन से संसार के मुर्दों को बहिश्तों में कायमी देंगे। रसूल साहब की बातों को सत्य सिद्ध करेंगे। कुरान की बातों को एक करामात की तरह सिद्ध करेंगे।

अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखिर बोझ सिर इन।
ए कौन करे मसी बिना, रात उड़ाए के दिन।।६३ ।।

कुरान की वारसी मोमिनों पर है और दुनियां को कायम करने की जिम्मेदारी का बोझ इन्हीं मोमिनों पर है। अज्ञान को समाप्त कर जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान ईसा रूह अल्लाह के बिना कौन करा सकता है?

Nijanand App

फुरमान आया ईसे पर, ए देखो साहेदी हदीस।
वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुस्मन अबलीस।।६४।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में लिखा है कि यह कुरान का ज्ञान ईसा रूह अल्लाह के वास्ते ही आया है, परन्तु दुनियां वाले जिनके दिलों पर शैतान की बैठक है, इस बात को नहीं समझने देते।

सो ईसा कह्या आखिरी, ए जो करत आखिर के काम।
करनी माफक सब को, देसी फल मुसाफ तमाम।।६५।।

यह ईसा रूह अल्लाह ही आखिरत के समय कयामत के होने वाले सभी काम करेंगे। यही अपने दूसरे तन से श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहेंदी जाहिर होकर सबको उनकी करनी के माफिक फल देंगे।

ए कही ईसे की आखिर, अब कहूं इसदाए।
तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए।।६६।।

यह ईसा रूह अल्लाह के आखिर के समय की बातों को बताया है। अब खेल के पहले की बातें बताती हूं। खुदा ने जो इनसे वायदे किए थे, उसी के अनुसार ही रसूल साहब ने कुरान इमाम मेंहेंदी साहब के पास पहुंचा दिया।

कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अर्स से।
सिरदार तिनमें रूह अल्ला, हकें तासों कौल किया आपमें।।६७।।

परमधाम से उतरते समय श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा था कि मैं श्री श्यामा महारानी को भेजूंगा और वह तुम्हारे सिरदार होंगे। अपने भी आने का वायदा रूहों से किया।

कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखिरी फुरमान।
रूह अल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढ़सी कुरान।।६८।।

रसूल साहब कहते हैं कि श्री श्यामाजी के वास्ते ही मैं यह आखिरी फरमान (कुरान) लाया हूं। श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज बाद में आएंगे। जो जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर कुरान को पढ़ेंगे।

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन।
सुभेसक भाने लदुन्नी, होसी सब दिलों पाक आकीन।।६९।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से वह सबके अन्दर के शैतान को मार देंगे। जिससे सारी दुनियां में एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) ही हो जाएगा। यह तारतम वाणी सबके दिल के संशय मिटाएगी और सबके दिलों को पाककर पारब्रह्म पर यकीन दिलाएगी।

ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहों सों किए इसदाए।
सो कुंजी दई दिल मसिएं, क्यों औरों खोल्या जाए।।७०।।

खुदा ने रूहों से जो वायदे किए थे, उन वायदों को रसूल साहब ने कुरान लाकर जाहिर कर दिया। ईसा रूह अल्लाह ने तारतम ज्ञान की कुंजी से उसके छिपे रहस्यों को खोला। बिना तारतम वाणी के दूसरे इन कुरान के रहस्य को कैसे खोल सकते थे?

Nijanand App

कुरान वारस मोमिन कहे, पढ़या या उमी होए।
बिन अर्स रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके कोए।।७१ ।।

कुरान को समझने वाले मोमिन हैं चाहे वह पढ़े हों या अनपढ़ हों। खुदा की इन न्यामतों को परमधाम के मोमिनों के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं ले सकता।

हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ।
सो इमाम खोलें बीच अर्स रूहों, जो एक तन सुंनत–जमात।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज के आदेश को रसूल साहब लाए। श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाईं। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज परमधाम की रूहों के बीच जो एक ही तन हैं, एक ही सुन्नत जमात के हैं, कुरान के भेद खोल रहे हैं।

जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार।
काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार।।७३ ।।

जब आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज अपने मोमिनों को लेकर पधारेंगे, तो कुरान के सारे रहस्यों को खोलकर पारब्रह्म की पहचान करा देंगे। तब श्री प्राणनाथजी महाराज न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे और सबको बहिश्तों में कायमी देंगे। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना बहिश्तों के दरवाजे दूसरा कौन खोल सकता है?

कहे महंमद मैं अव्वल, रूहअल्ला आवसी आखिर।
अहेलबेती मेंहेंदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर।।७४ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मैं पहले आया हूं। रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी आखिर में आएंगे। परमधाम के मोमिनों के बीच इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज अपनी जमात को शरण में लेंगे।

मजाजियों में ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात।
जब हक हादी आई उमत, तबही उड़ी जुलमात।।७५ ।।

झूठे दिल वालों ने समझा क्या खुदा कुरान के ज्ञान से न्याय करेगा? जब श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी महारानी, रूह मोमिन आए, तभी अन्धकार मिटा।

आया फुरमान रूहअल्ला पर, करसी एही कयामत के काम।
मार दज्जाल एक दीन कर, देसी हैयाती तमाम।।७६ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी पर तारतम वाणी का ज्ञान आया। यह ही अपने दूसरे तन श्री प्राणनाथजी महाराज के रूप में जाहिर होकर कयामत के सारे काम पूरे करेंगे। संसार के अन्दर दज्जाल को मारकर, अर्थात् तारतम वाणी से सबके संशय मिटाकर सबको एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाकर कायमी देंगे।

अव्वल ल्याया एहिया, ईसे पर आकीन।
कहें पढ़े सो हो गया, जिने दई जिंदगानी दीन।।७७ ।।

कुरान में लिखा है कि श्री देवचन्द्रजी के ऊपर मेहराज ठाकुर सबसे पहले यकीन लाए। दुनियां वाले कहते हैं कि ईसा और एहिया की बातें बीत चुकी हैं, जिन्होंने धर्म को नया रूप दिया।

Nijanand App

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर।
ए सोई उतरे अर्स से, जिन किए कौल हजूर।।७८ ।।

यह मोमिन आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात हैं, जिन्होंने उनकी तारतम वाणी की बूंदों को ग्रहण किया। यही वह मोमिन हैं जो परमधाम से खेल में उतरे हैं। खुदा ने इन्हीं से वायदे किए थे।

कह्या आखिर पैगंमर आवसी, देसी साहेदी अपनी उमत।
जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी कयामत।।७९ ।।

कुरान में लिखा है कि इमाम मेंहदी साहब आखिर में आएंगे और अपनी जमात को कुरान की गवाही देकर यकीन दिलाएंगे। उन मोमिनों को यकीन दिलाएंगे जो खुदा से वायदा करके खेल में आए हैं। तभी दुनियां को कायमी होने का पता चलेगा।

निसान बड़ा ईसा आखिरी, और एही आखिरी किताब।
महंमद मेंहेंदी आखिरी, इमाम आखिरी खिताब।।८० ।।

इसलिए ईसा रूह अल्लाह को कयामत का बड़ा निशान बताया है और कुलजम सरूप को आखिरी किताब बताया है। इमाम मेंहदी ही आखिरी स्वरूप हैं, जिन्हें आखिरी इमाम होने का खिताब प्राप्त है।

एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत–अल्ला।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूरतजल्ला।।८१ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दो बड़े पहाड़ों के समान बताया है जो अखण्ड परमधाम की बातें बताएंगे और कुरान के बातूनी अर्थ खोलकर परमधाम का दर्शन कराएंगे।

कह्या आवसी असराफील, आखिरी बड़ा निसान।
जो फूंके जिमी पहाड़ उड़ावसी, दूजी फूंके कायम करे जहान।।८२ ।।

इन्हीं इमाम मेंहेंदी के साथ में असराफील फरिश्ता आएगा जिसे कयामत का सबसे बड़ा निशान बताया गया है। इस असराफील फरिश्ते के एक बार सूर फूंकने से दुनियां में फैले झूठे समस्त ज्ञान समाप्त हो जाएंगे। दूसरी बार सूर फूंककर सारे संसार को बहिश्तों में अखण्ड कायमी देगा।

असराफील चिन्हाए सों, मगज मुसाफी गाए।
चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उड़ाए।।८३ ।।

यह असराफील फरिश्ता सबसे पहले कुरान के रहस्यों को खोलकर अपनी पहचान बताएगा और चौदह लोकों के ज्ञानियों के घमण्ड को समाप्त करेगा और सच्चा ज्ञान देकर अपनी पहचान कराएगा।

जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए।
तिन सबों कायम किए, रही आठों भिस्त भराए।।८४ ।।

असराफील जब दूसरी बार सूर फूंकेगा तो खुदा की पहचान कराएगा और तब संसार के लोगों को आठ किस्म की बहिश्तों में कायमी देगा।

आया असराफील आखिर, साथ आखिरी इमाम।
माएने मगज मुसाफ के, किए जाहेर सब तमाम।।८५ ।।

यह असराफील फरिश्ता इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के साथ अन्त में आया और आकर कुरान के सारे रहस्य जाहिर कर दिए।

Nijanand App

हकें ऐसा साथ इमाम के, दिया फरिस्ता मरद।
उड़ावे जिमी पहाड़ जड़ मूल से, सो होसी फरिस्ता कैसे कद।। ८६ ।।

खुदा ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के साथ में मर्द फरिश्ते असराफील को भेजा जो दुनियां के ज्ञान के अन्धकार को जड़ (मूल) से समाप्त कर देता है। विचार करने वाली बात है कि यह असराफील फरिश्ता कितना लम्बा चौड़ा होगा।

आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर।
बरस्या आब सबन पर, अर्स अजीम का नूर।। ८७ ।।

इस असराफील फरिश्ते ने दूसरी बार सूर फूंककर आठ बहिश्तें कायम कर दीं। और वाणी मिलने से अब दुनियां को परमधाम की पहचान मिल गई।

हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक।
और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक।। ८८ ।।

दुनियां के बुजरक देवी-देवताओं को भी असराफील ने अखण्ड कर दिया और आसमान और जमीन के सभी जीवों को भी अखण्ड कर दिया।

आठों भिस्त कायम करी, कर रोसन जहूर।
पेहेचानो ए फरिस्ता, ले हक इलम सहूर।। ८९ ।।

सारे संसार को ज्ञान देकर इसने आठों बहिश्तें कायम कर दी हैं। अब कुलजम सरूप की वाणी से इस फरिश्ते की पहचान करो।

आसमान जिमी जड़ मूल सें, एक फूंके देवे उड़ाए।
कायम करे सब दूजी फूंके, बका भिस्तमें उठाए।। ९० ।।

यह असराफील फरिश्ता एक बार सूर फूंकने से आसमान और जमीन के इस संसार को जड़ से समाप्त कर देता है और दूसरी बार सूर फूंकने से आठ बहिश्तों में कायम कर देता है।

ए साथ महंमद मेंहेंदी के, फरिस्ता आया आखिर।
क्यों न चीन्हो तुम इन को, जो करसी दिन फजर।। ९१ ।।

यह असराफील फरिश्ता आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के साथ आया है और यही अज्ञान हटाकर ज्ञान का उजाला करेगा, इसलिए तुम इसे क्यों नहीं पहचानते?

कह्या गाए असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान।
या से पाक होए दुनी कयामतें, फल पाया सुभान।। ९२ ।।

लिखा है कि असराफील आखिर में आकर कुरान को गाएगा और उसके छिपे रहस्यों को जाहिर करेगा। इससे दुनियां पाक-साफ होकर खुदा की पहचान करेगी और बहिश्तों में कायमी पाएगी।

ए पहाड़ निसान आखिरी, जिन देखाई बका बिसात।
दुनी पहाड़ पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात।। ९३ ।।

आखिर के वक्त में ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की महिमा ही दो पहाड़ों के समान बताई है, क्योंकि इन्होंने ही अखण्ड घर की पहचान कराई। अरब वाले जाहिरी लोग जाहिरी पहाड़ों को पूजकर कहते हैं कि यही हमको अखण्ड परमधाम देंगे।

Nijanand App

मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत।
हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत।। ९४ ।।

रसूल साहब को मेयराज हुआ (दर्शन हुआ) और उन्होंने परमधाम की हकीकत बताई। जिनके दिल को खुदा का अर्श कहा है, उन मोमिनों ने कुलजम सरूप की वाणी से ग्रहण किया और अखण्ड परमधाम तथा श्री राजजी के स्वरूप पर ईमान लाए।

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार।
बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार।। ९५ ।।

अब सारी दुनियां के लोग इस बात को समझेंगे, क्योंकि शरीयत का झण्डा रसूल साहब की कुरान, मारफत का झण्डा कुलजम सरूप साहब की वाणी पुकार कर रही है। यही बातूनी ज्ञान का झण्डा है जो अक्षर के पार परमधाम तक पहुंचाता है।

दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पांउं कटाए पुल–सरात।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात।। ९६ ।।

दुनियां जाहिरी झण्डों को लेकर चल रही है, इसलिए शरीयत (कर्मकाण्ड) के रास्ते में उनके पैर कट जाते हैं और शरीर से चला नहीं जाता, क्योंकि उन्होंने पारब्रह्म के हकीकत के ज्ञान को नहीं लिया।

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोले कयामत निसान।
हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान।। ९७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं। अब उनके ज्ञान से अखण्ड परमधाम श्री राजजी महाराज के स्वरूप की भी पहचान हो गई। इनके साथ आए असराफील फरिश्ते ने सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को फैला दिया।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ६८५ ।।

झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिन्दमें

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत।
सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिसको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया, उसे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान हो गई। वही (नाजी फिरका) निजानन्द सम्प्रदाय में आ गया। वही श्री पद्मावतीपुरी जहां हकीकी झण्डा खड़ा किया, उसके तले आ गया (अनुयायी कहलाया)।

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन।
जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन।। २ ।।

कुरान में लिखा है कि जब इसकी हकीकत के रहस्य खुल जाएंगे, तब सब एक दीन, एक पारब्रह्म के पूजक हो जाएंगे। जब जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर्य तारतम वाणी (कुलजम सरूप) आएगी तो उसे पहचानकर सबको पारब्रह्म पर यकीन आ जाएगा।

Nijanand App